तीन चोर और राजा

तीन चोर और राजा

ईरान की लोककथा

बहुत पहले ईरान में एक राजा रहता था जिसकी लंबी, शानदार मूंछे थीं. राजा का नाम अब्बास था. उन्हें खाना बहुत पसंद था. हर रात वो बढ़िया लज़ीज़ खाना खाते थे, लेकिन वो हमेशा अकेला ही भोजन करते थे.

एक शाम राजा केसरी चावल और अनार के साथ मछली खाने के लिए बैठे. लेकिन जब उन्होंने मछली को खाने की कोशिश की, तो मछली इधर-उधर मंडराने लगी. उस रात राजा खाना नहीं खा सके. इसलिए उन्होंने अपने विश्वास-पात्र वज़ीर को बुलाया.

मछली को देखकर वज़ीर ने कहा. "महामहिम, यह इस बात का संकेत है की हमारे राज्य में कुछ लोग भूखे हैं. उन्हें खिलाने के बाद ही आप अपना रात का खाना खा पाएंगे."

फिर राजा अब्बास ने कुछ भोजन लपेटा. उन्होंने एक गरीब आदमी का भेष धारण किया और फिर वे महल से बाहर निकले.

उन्होंने अपने पूरे राज्य में खोजा. अंत में वो तीन गरीब आदमियों के पास पहुंचे जो आग के चारों ओर एक-दूसरे से बातें कर रहे थे.

पहले आदमी के लाल और गोल होंठ थे. दूसरे की शानदार आँखें थीं, और तीसरे की एक जबरदस्त नाक थी.

राजा ने तीनों भूखे आदमियों के साथ अपना रात का खाना साझा किया. खाने के बाद वो आग तापते हुए आराम करने लगे. तब उन तीनों आदमियों ने राजा के साथ अपना रहस्य साझा किया.

"हम आज रात राजा के यहाँ चोरी करने जा रहे हैं," उन्होंने स्वीकारा.

"यह काम असंभव होगा!" राजा चिल्लाया.

"पर हम अपनी विशेष शक्तियों से उसे संभव बनाएंगे," पहला चोर अपने लाल गोल होंठों में से फुसफुसाया. "मैं एक ऐसी सीटी की धुन बजा सकता हूं जिससे हर किसी को नींद आ जाएगी."

दूसरे चोर ने राजा को अपनी शानदार आँखों से देखा. "मैं दीवारो के पीछे की चीज़ें भी देख सकता हूं."

तीसरे चोर ने अपनी जबरदस्त नाक से सूँघा. "मेरा छींक इतनी ताकतवर है कि वो किसी भी दरवाज़े को उसके कब्ज़ों से उखाड़ फेंक सकती है."

राजा ने पहले चोर के होंठ, दूसरे चोर की आँखों और तीसरे चोर की नाक को देखा. फिर उन्होंने अपनी मूंछों को मरोड़ा और कहा, "मेरे पास भी एक शक्ति है. अगर कहीं तुम लोग पकड़े गए तो मैं अपनी मूंछे मरोड़कर तुम्हें छुड़ा दूंगा."

राजा की मूछें बड़ी शानदार लग रही थीं, इसलिए चोरों ने उसे भी अपने गिरोह में शामिल कर लिया.

फिर राजा और तीनों चोर, आधी रात को महल में चोरी करने पहुंचे.

जब वे महल में पहुँचे तो पहला चोर गेट के पास गया. उसने अपने गोल होंठों से एक लयदार सीटी बजाई. उससे हवा स्थिर होकर एकदम भारी हो गई. फिर फ़ौरन सभी पहरेदार गहरी नींद में सो गए और धीरे-धीरे करके जमीन पर गिर गए. फिर पहले चोर ने अपने दूसरे साथियों को हाथ हिलाकर बुलाया. जब राजा ने अपने पहरेदारों को सोए हुए देखा तो उसे यकीन नहीं हुआ.

दूसरे चोर ने प्रत्येक दिशा में देखा. फिर वो अपने साथियों को भूल-भुलइयों में से होकर राजा के ख़ज़ाने के दरवाज़े के पास ले गया. राजा आश्चर्यचकित रह गया. चोरों ने सच में उसका खजाना खोज निकाला था!

तीसरे चोर ने दूसरों को अपने पीछे खड़े रहने का इशारा किया. फिर उसकी नाक कांपने लगी और उसे बड़ी ज़ोर की छींक आई आ....च्छी ....! उसकी शक्तिशाली छींक से ख़ज़ाने का दरवाज़ा टूट गया. यह देखकर राजा एकदम दंग रह गया.

अब उनके सामने शानदार खजाना था जिसमें बेशुमार दौलत भरी थी. चोर खुशी से झूम उठे और उन्होंने अपने बोरों को चमचमाते रत्नों और चमकदार सोने के सिक्कों से भरा. फिर वे अपनी लूट को लेकर महल के पिछले दरवाज़े से भागे. घबराया हुआ राजा भी उनके पीछे-पीछे भागा.

आग के पास वापस आकर चोरों ने राजा के साथ भी चोरी का खजाना साझा किया.

राजा ने तीनों चोरों के सो जाने की प्रतीक्षा की. उसके बाद वो अपने महल में लौट आए.

राजा ने अपने शाही वस्त्र पहने और फिर अपने सोए हुए पहरेदारों को जगाया और उन्हें चोरों को गिरफ्तार करने का आदेश दिया. जल्द ही राजा के पहरेदार चोरों को भीड़ भरे दरबार में घसीटते हुए लाए.

राजा ने अपने वजीर को भी बुलवाया.

वजीर ने तीनों चोरों को गौर से देखा. "महामहिम, वे सिर्फ एक संकेत हैं. आप अपनी शक्ति का उपयोग बुराई या अच्छाई, दोनों के लिए कर सकते हैं."

राजा ने वजीर को बड़ी सख्ती से देखा. "देखो, ये तीनों चोर हैं." फिर राजा अपने सिंहासन पर जाकर बैठ गया.
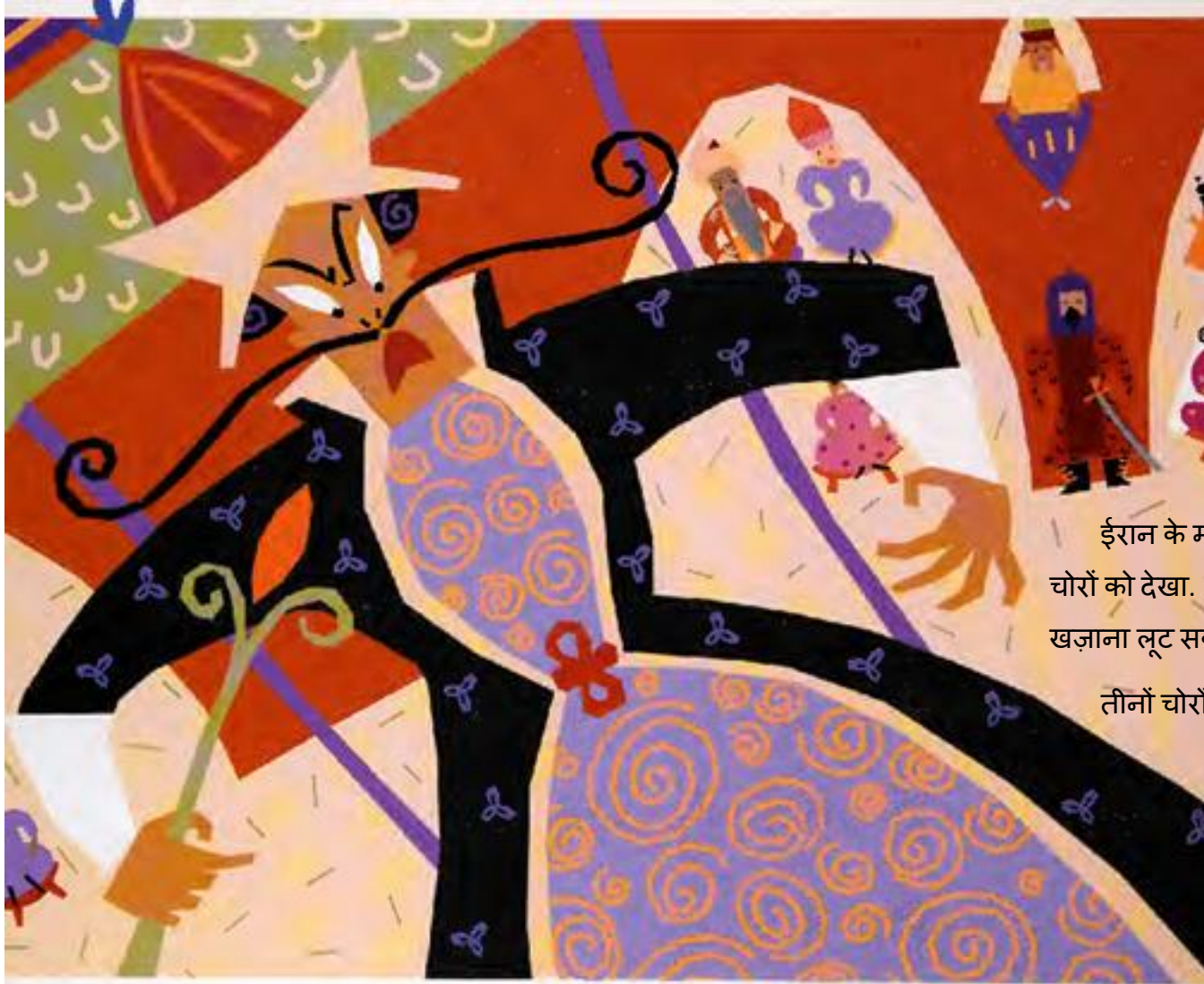
ईरान के महान राजा ने अपने सिंहासन से उन भयभीत चोरों को देखा. "तुम लोगों ने सोचा था कि तुम राजा का खज़ाना लूट सकते हो!" वो चिल्लाया.

तीनों चोरों ने अपनी बेगुनाही की गुहार लगाई.

उसके बाद राजा अब्बास ने अपने शाही वस्त्र उतार फेंके. उनके नीचे वही गंदे कपड़े थे जो उन्होंने चोरों से मिलते समय पहने थे. वो देख अदालत में हड़कंप मच गया. चोरों ने क्षमा मांगी.

फिर राजा ने अपने पहरेदारों को बुलाया.

"इन तीनों को कालकोठरी में ले जाकर बंद कर दो!"

पहरेदारों ने चोरों को घेर लिया. पहले चोर ने दूसरे चोर को कोहनी मारी. दूसरे चोर ने तीसरे को कोहनी मारी. फिर तीसरे चोर ने अपनी हिम्मत बटोरकर राजा से कहा, "महामहिम, कल रात आपने कहा था कि अगर हम कहीं पकड़े गए तो आप अपनी मूंछे मरोड़कर हमें आज़ाद करवा देंगे. कृपया अभी तुरंत अपनी मूंछे मरोड़ें."

फिर राजा ने इशारा किया. पहरेदार रुक गए. अदालत चुप हो गई.

राजा ने सोचा. उन्होंने पहले चोर के होंठ, दूसरे चोर की आँखें और तीसरे चोर की नाक को देखा. फिर राजा ने कुछ देर और सोचा. उन्होंने अपने वज़ीर की ओर देखा और उसकी बात को याद किया. वज़ीर ने कहा था. "शक्ति का उपयोग अच्छे या बुरे दोनों कामों के लिए किया जा सकता है." धीरे-धीरे राजा के चेहरे पर एक मुस्कान फैली और फिर वे अपनी मूंछें मरोड़ने लगे.

अंत में राजा ने घोषणा की, "एक राजा कभी भी अपना वादा नहीं तोड़ता है. आज से आप तीनों मेरे महल में रहेंगे. साथ में हम अपनी शक्तियों का उपयोग करके यह सुनिश्चित करेंगे कि हमारे राज्य में कभी कोई भूखा न रहे."

यह सुनकर तीनों चोर इतने खुश हुए कि पहले चोर के गोल होंठों पर एक मुस्कान आई, दूसरे चोर की आँखें खुशी से झूम उठीं, और तीसरे चोर की नाक ख़ुशी से थिरक उठी. अदालत ने अपने दयालु और बुद्धिमान राजा की जय-जयकार की. फिर वज़ीर ने राजा की ओर देखा और अपना सिर हिलाया.
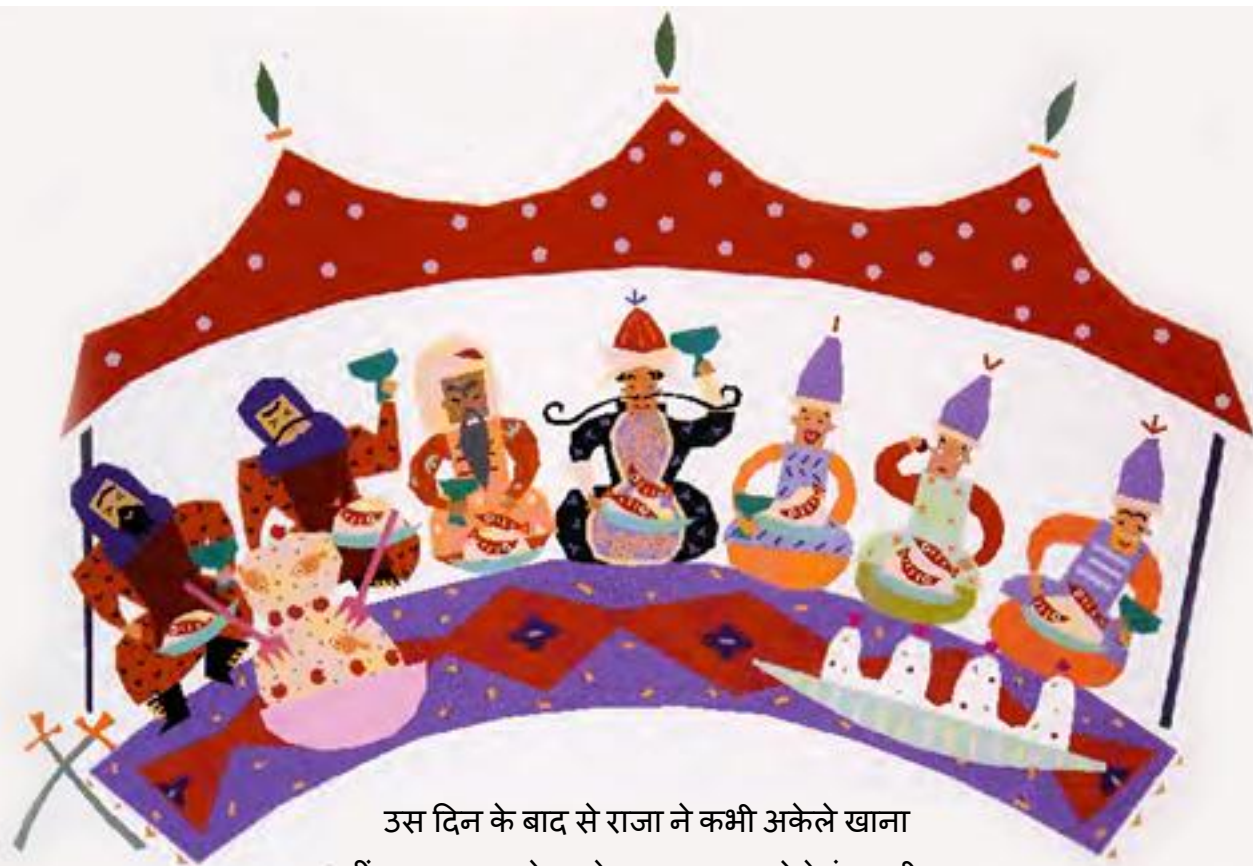
उस दिन के बाद से राजा ने कभी अकेले खाना नहीं खाया. राजा के पहरेदार, उनका भरोसेमंद वज़ीर और तीनों चोरों ने रोज़ाना राजा के साथ मिलकर रात का खाना खाया. फिर जब भी वे केसर के चावल, अनार के साथ मछली खाते, तो राजा मुस्कुरा देते.

समाप्त